अध्याय
03

ग्रामीण जीवन एवं समाज

भारत में अंग्रेजों ने व्यापार के उद्देश्य से ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की थी। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के राजाओं की अदूरदर्शिता का फायदा उठाकर इसने भारत के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप कर अपना प्रभाव बढ़ाना प्रारम्भ किया। 12 अगस्त 1765 ई. को कम्पनी के गर्वनर रॉबर्ट क्लाइव ने मुगल बादशाह से बंगाल की दीवानी प्राप्त की। दीवान के तौर पर कम्पनी अपने नियंत्रण वाले भू-भाग के आर्थिक मामलों की मुख्य शासक बन गई थी।

कम्पनी के गवर्नर रॉबर्ट क्लाइव द्वारा बंगाल की दीवानी प्राप्त करना निश्चय ही अंग्रेजों के भारत में औपनिवेशिक विस्तार के लिए 'मील का पत्थर' साबित हुआ।

इस अध्याय में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि कम्पनी ने ग्रामीण इलाकों को उपनिवेश कैसे बनाया, आय के संसाधन कैसे जुटाए, लोगों के अधिकार किस तरह तय किए और मनमाफिक फसलों की खेती कैसे करायी ?

1765 ई. में रॉबर्ट क्लाइव मुगल बादशाह से बिहार, झारखण्ड और ओडिशा की दीवानी ग्रहण करता हुआ।

© not to be republished

कम्पनी की आमदनी

दीवानी हासिल करने के बाद भी कम्पनी अपने आप को व्यापारी मानती थी। कम्पनी यह समझ रही थी कि उसे सावधानी से आगे बढ़ना है। कम्पनी भारी भरकम लगान तो चाहती थी। लेकिन उसके आंकलन और वसूली की कोई नियमित व्यवस्था करने में हिचकिचा रही थी। बाहरी ताकत होने के कारण उन्हें उन लोगों को भी शांत रखना था जो गाँव-देहात में पहले शासन चला चुके थे और जिनके पास अभी भी काफी ताकत और सम्मान था। ऐसे लोगों को नियंत्रित करना जरूरी था लेकिन उन्हें खत्म नहीं किया जा सकता था।

कम्पनी को कोशिश रही थी कि वह ज्यादा से ज्यादा राजस्व वसूले और कम कीमत पर बढ़िया सूती और रेशमी कपड़ा खरीदे। 1765 से पहले कम्पनी ब्रिटेन से सोने और चाँदी का आयात करती थी और इन चीजों

के बदले सामान खरीदती थी। अब बंगाल में इक्कट्ठा होने वाले पैसे से निर्यात की चीजें खरीदी जा सकती थी।

जल्द ही यह पता चल गया कि बंगाल की अर्थव्यवस्था एक गहरे संकट में फँस चुकी है। कारीगर गाँव छोड़कर जाने पर इसलिए मजबूर थे क्योंकि उन्हें बहुत कीमत पर अपने सामानों को बेचने पर मजबूर थे। किसान अपनी लगान नहीं चुका पा रहे थे। कारीगरों का उत्पादन गिर रहा था खेती चौपट हो रही थी। 1770 में पड़े आकाल ने बंगाल में एक करोड़ लोगों को मौत की नींद सुला दी। इस अकाल में लगभग एक तिहाई आबादी समाप्त हो गई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) प्रारंभ में अंग्रेज, भारत किस उद्देश्य से आए थे ?

(क) शासन (ख) व्यापार (ग) धर्म प्रचार (घ) शिक्षा प्राप्त करने।

(ii) ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना भारत में किसके द्वारा की गई थी ?

(क) पूर्तगाली द्वारा (ख) फ्रांसिसियों द्वारा (ग) रोमनों द्वारा (घ) अंग्रेजों द्वारा

(iii) अंग्रेज भारत से कौन-सा सामान इंगलैण्ड ले जाते थे ?

(क) कोयला (ख) सूती कपड़ा (ग) अभ्रक (घ) सोना-चाँदी

(iv) कंपनी ने बंगाल की दीवानी कब प्राप्त की ?

(क) 1757 ई. (ख) 1763 ई. (ग) 1765 ई. (घ) 1600 ई.

(v) कंपनी ने जब बंगाल की दीवानी प्राप्त की थी उस समय कंपनी के गवर्नर जनरल कौन थे ?

(क) लार्ड कैनिंग (ख) रॉबर्ट क्लाइव (ग) डलहौजी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(i) (ख), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (ग), (v) (ख)।

अंग्रेजों की भू-राजस्व व्याख्या—

अर्थव्यवस्था संकट में थी इस कारण कंपनी ने खेती में निवेश करना तथा खेती में सुधार के लिए कुछ व्यवस्थाएँ बनाई जो निम्न हैं—

© JCERT not to be republished

स्थायी बंदोबस्त—

कंपनी ने 1793 ई. में बंगाल में स्थायी बंदोबस्त लागू किया, जिसे जागीरदारी व्यवस्था भी कहा जाता था। बंगाल के बाद इसे उड़ीसा में भी लागू किया गया। इस बंदोबस्त के शर्तों के अनुसार राजाओं और तालुकदारों को जमींदारों के रूप में मान्यता दी गई। उन्हें किसानों से लगान वसूल कर अंग्रेजों तक पहुँचाने का जिम्मा सौंपा गया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत जमींदारों से मालगुजारी के रूप में एक निश्चित आय हमेशा के लिए निर्धारित कर ली जाती थी। जमींदार किसानों से वसूले भाग का 10/11 भाग सरकारी कोष में जमा करता था तथा शेष 1/11 भाग अपने खर्च, परिश्रम एवं दायित्व के लिए अपने पास रखता था। यदि जमींदार निश्चित समय पर लगान सरकारी खजाने में जमा नहीं करते, तो उनकी जमीन नीलाम कर दी जाती थी। अंग्रेज इस व्यवस्था के तहत तय और नियमित आय को सुनिश्चित करना चाहते थे। लगान वसूली के लिए वे अपना समय बर्बाद करना नहीं चाहते थे। अंग्रेज जमींदारों से यह अपेक्षा रखते थे कि जमींदार अपने हिस्से के लगान से जमीन में सुधार के उपाय करेंगे। बदले हुए हालात से किसानों द्वारा खेती पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा, क्योंकि उन्हें अंग्रेजों को अधिक लगान चुकाना था। इस व्यवस्था के द्वारा कंपनी जमींदारों को अपना सशक्त समर्थक बनाना चाहती थी। इस व्यवस्था ने सर्वाधिक लाभ जमींदारों को ही पहुँचाया। वे अब स्थायी भू–स्वामी बन गए। स्थायी बंदोबस्त की व्यवस्था कंपनी के गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्नवालिस के समय प्रारंभ की गई।

स्थायी बंदोबस्त के दोष—किसानों के लिए यह व्यवस्था दमनकारी थी। एक तरफ किसानों को ज्यादा लगान देना पड़ रहा था जो दूसरी तरफ जमीन पर उनका अधिकार भी सुरक्षित नहीं था। किसानों को लगान चुकाने के लिए अकसर महाजन से कर्जा लेना पड़ता था। अगर वह कर्जा चुकाने में समर्थ नहीं होता था तो उसे पुश्तैनी जमीन से बेदखल कर दिया जाता था। सरकार का किसानों के साथ कोई संबंध नहीं था। लगान बढ़ाने का अधिकार जमींदारों के पास था, इससे जमींदारों की संपत्ति में बढ़ोत्तरी होते चली गई।

कंपनी के अफसरों ने पाया कि जमींदार अपने हिस्से का लगान तो लेते हैं पर वे जमींन पर सुधार के लिए खर्चा नहीं कर रहे थे। असल में जमींदारों को कंपनी द्वारा तय राजस्व को चुकाने में परेशानी हो रही थी। क्योंकि अंग्रेजों द्वारा तय राजस्व को राशि नहीं देने पर जमींदारी छीनकर नीलाम कर दी जाती थी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (रिक्त स्थानों की पूर्ति करें)

(i) स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था की संबंध .... से था ?

(ii) .... में अंग्रेजों द्वारा स्थायी बंदोबस्त लागू किया गया ?

(iii) स्थायी बंदोबस्त से ज्यादा नुकसान .... को हुआ ?

(iv) स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था ने .... को जमीन की असली मालिक बना दिया।

© JCERT not to be republished

(v) स्थायी बंदोबस्त में अंग्रेजों को दिये जाने वाले भू-राजस्व .... रूप से तय कर दिया गए ?

(vi) जमींदारों द्वारा किसानों से वसूले गए लगान का .... भाग अंग्रेजों को दिया जाता था।

उत्तर—(i) भू-लगान, (ii) बंगाल, (iii) किसानों, (iv) जमींदारों, (v) स्थायी, (vi) 10/11।

महालबाड़ी व्यवस्था—

19वीं सदी में ही कम्पनी के बहुत सारे अधिकारियों को विश्वास हो गया था कि राजस्व बंदोबस्त में दोबारा बदलाव लाना जरूरी है। जब कम्पनी को शासन और व्यापार के अपने खर्चे चलाने के लिए और पैसों की जरुरत हो तो स्थायी रूप से राजस्व तय करने का काम कैसे किया जा सकता है।

होल्ट मैकेंजी नामक अंग्रेज ने बंगाल प्रेजिडेंसी के उत्तर-पश्चिमी प्रांतों (इस इलाके का ज्यादातर हिस्सा अब उत्तर प्रदेश में है) में 1822 ई. में एक नई व्यवस्था तैयार की। मैकेंजी को यह विश्वास था कि उत्तर भारतीय समाज में गाँव एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है और उसको बचाए रखना चाहिए। उसके आदेश पर कलेक्टरों ने गाँव-गाँव का दौरा किया, जमींन की जाँच की, खेतों को मापा और विभिन्न समूहों के रीति-रिवाजों को दर्ज किया। गाँव के एक-एक खेत के अनुमानित राजस्व को जोड़कर हर गाँव या ग्राम समूह (महाल) से वसूल होने वाले राजस्व का हिसाब लगाया जाता था। इस राजस्व को स्थायी रूप से तय करने के बजाय इसमें संशोधन की गुंजाइश रखी गई। राजस्व इकट्ठा करने और उसे कंपनी को अदा करने का जिम्मा जमींदार के बजाय गाँव के मुखिया को सौंप दिया गया। गाँव को महाल कहे जाने के कारण इस व्यवस्था को महालवाड़ी व्यवस्था का नाम दिया गया। इस व्यवस्था को भारत के 30% भूमि पर लागू की गई। इसमें लगान का दर उपज का 80% होता था। कालांतर में इसे विलियम बैंटिक ने 66 प्रतिशत कर दिया।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) महालवाड़ी व्यवस्था को तैयार करने वाले अंग्रेज का नाम बताओ ?

(क) लार्ड कार्नवालिस (ख) विलियम बैंटिक

(ग) होल्ट मैकेंजी (ख) इनमें से कोई नहीं

(ii) महालवाड़ी व्यवस्था भारत में कब लागू की गई ?

(क) 1800 ई. (ख) 1818 ई. (ग) 1795 ई. (घ) 1822 ई.

(iii) महालवाड़ी व्यवस्था में किसानों से लगान वसूलने की जिम्मेदारी किसकी थी ?

(क) जमींदार को (ख) गाँव के मुखिया को

(ग) जिला कलेक्टर को (घ) इनमें से कोई नहीं

© JCERT not to be republished

(iv) भारत के कितने प्रतिशत भू-भाग पर महालवाड़ी व्यवस्था लागू की गई।

(क) 80% (ख) 66% (ग) 30% (घ) 50%

(v) महालवाड़ी व्यवस्था में महाल किसे कहा जाता था ?

(क) गाँवों को (ख) शहरों को (ग) कलेक्टरों को (घ) जमींदारों को

उत्तर—(i) (ग), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (ग), (v) (क)।

रैयतवाड़ी व्यवस्था—

ब्रिटिश नियंत्रण वाले दक्षिण भारतीय इलाके खासकर मद्रास एवं बम्बई के इलाके में रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की गई। सर्वप्रथम इसे कैप्टन एलेक्जेंडर रीड एवं टीपू सुल्तान के मध्य हुए युद्ध से जो इलाका कम्पनी के नियंत्रण में आया वहाँ लागू किया गया। रैयतवाड़ी के प्रारंभिक प्रयोग के बाद टॉमस मुनरो (गवर्नर मद्रास 1813 ई. में) ने इसे 1820 ई. में पूरे मद्रास प्रेसीडेन्सी में लागू कर दी गई।

रीड और मुनरों को लगता था कि दक्षिण में परंपरागत जमींदार नहीं थे। इसलिए उन्हें सीधे किसानों (रैयतों) से ही बंदोबस्त करना चाहिए जो पीढ़ियों से जमींन पर खेती करते आ रहे हैं। इन्हें लगता था कि राजस्व आकलन से पहले उनके खेतों का सावधानीपूर्वक और अलग से सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। मुनरो का मानना था कि अंग्रेजों को पिता की भाँति किसानों की रक्षा करनी चाहिए।

इस व्यवस्था में लगान के रूप में उपज का 50 भाग वसूल किया जाता था। मद्रास में यह व्यवस्था लगभग 30 सालों तक लागू रही।

रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू होने के कुछ साल बाद इसमें समस्याएँ दिखाई देने लगी। आमदनी बढ़ाने के चक्कर में ज्यादा राजस्व तय हो गया था, जिससे किसान राजस्व नहीं चुका पा रहे थे। किसान गाँवों से भाग गये। बहुत से गाँव वीरान हो गए। आशावादी अफसरों को विश्वास था कि नई व्यवस्था किसानों को उद्यमशील एवं सम्पन्न बना देगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

© JCERT not to be republished

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(i) रैयतवाड़ी व्यवस्था .... में लागू की गई।

(ii) .... में इसे पूरे मद्रास में लागू कर दी गई।

(iii) एलेक्जेंडर रीड और .... के मध्य युद्ध हुए थे।

(iv) रैयतवाड़ी व्यवस्था मद्रास में .... वर्षों तक लागू रही।

(v) .... को रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू करने का श्रेय दिया जाता है।

उत्तर—(i) मद्रास, (ii) 1820 ई., (iii) टीपू सुल्तान, (iv) 30, (v) थॉमस मुनरो।

यूरोप के लिए व्यावसायिक फसलें—

अंग्रेजों ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों को न सिर्फ राजस्व वसूली का जरिया बनाया बल्कि यूरोपीय देशों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर जबरन फसल उगवाये। अठारहवीं सदी के आखिर तक कंपनी ने अफीम और नील की खेती पर पूरा जोर लगा दिया। इसके बाद लगभग 150 सालों तक अंग्रेज देश के विभिन्न भागों में किसी न किसी फसल के लिए किसानों को मजबूर करते रहे। बंगाल में पटसन, असम में चाय उत्तर प्रदेश में गन्ना, पंजाब में गेंहूँ, महाराष्ट्र व पंजाब में कपास, मद्रास में चावल उत्पादन पर कंपनी ने दबाव डाला। 1833 ई. के एक अधिनियम के तहत अग्रेजों को भारत में भूमि खरीदने का अधिकार मिल गया। भारत में पहला चाय बगान 1835 ई. में असम में लगाया गया। असम चाय कंपनी पहली चाय कंपनी थी। चाय बगानों में काम करने के लिए झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों से बँधुआ मजदूरों को लाया गया।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(i) ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत में .... और .... की खेती पर जोर दिया।

(ii) कंपनी ने बंगाल में .... उत्पादन पर बल दिया।

(iii) कपास उत्पादन के लिए कंपनी ने .... और .... को चिन्हित किया।

(iv) .... के अधिनियम के तहत अंग्रेजों को भारत में भूमि खरीदने का अधिकार मिल गया।

(v) .... कंपनी भारत की पहली चाय कंपनी थी।

उत्तर—(i) नील, अफीम, (ii) पटसन, (iii) महाराष्ट्र, पंजाब, (iv) 1833 ई., (v) असम चाय।

भारत में नील उत्पादन—

नील मुख्यत: उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अपनाया जाता है। भारत में नील की खेती बहुत पहले से होती है। तेरहवीं सदी तक इटली फ्रांस तथा ब्रिटेन के कपड़ा उत्पादक कपड़े की रंगाई के लिए भारतीय नील का इस्तेमाल कर रहे थे। उस समय तक भारतीय नील की बहुत थोड़ी मात्रा ही यूरोपीय बाजार तक पहुँचती थी। उसकी कीमत भी बहुत ऊँची रहती थी। इसलिए यूरोपीय कपड़ा उत्पादकों को बैंगनी और नीले रंग बनाने के लिए वोड नामक एक और पौधे पर निर्भर रहना पड़ता था। वोड पौधा शीतोष्ण क्षेत्र में उगता था। इसलिए यूरोप में आसानी से मिल जाता था। नील के साथ प्रतिस्पर्धा से परेशान यूरोप के वोड उत्पादकों ने सरकार पर दबाव डाला कि वे नील के आयत पर पूरी तरह पाबंदी लगा दे।

वोड की तुलना में नील का रंग काफी चमकदार था। नील के उपयोग के कपड़े ज्यादा चमकदार दिखते थे। जबकि वोड से मिलने वाला रंग बेजान और फीका होता था। यूरोपीय लोग भारतीय नील द्वारा तैयार कपड़े पहनना ज्यादा पसंद करते थे। 17वीं शताब्दी तक यूरोपीय कपड़ा उत्पादकों ने भारतीय नील के आयात पर लगी प्रतिबंध में ढील देने के लिए अपनी सरकार को राजी कर लिया। कैरीबियाई द्वीप समूह स्थित सेंट

© JCERT not to be republished

डॉमिंग्यू में फ्रांसीसी, ब्राजील में पुर्तगाली, जमैका में ब्रिटिश और वेजेजुएला में स्पेनिश लोग नील की खेती करने लगे। उत्तरी अमेरिका के बहुत सारे भागों में नील की खेती की जाने की जानकारी मिली।

18वीं सदी के आरंभ में ब्रिटेन की औद्योगिकीकरण ने यूरोपीय देशों में कपास के मांग को बढ़ा दिया। कपड़े के उत्पादन में एकाएक भारी वृद्धि हुई। इसलिए कपड़ों की रंगाई के लिए भारतीय नील के मांग में भारी बढ़ोत्तरी हुई। इसी बीच अचानक से वेस्टइंडीज और अमेरिका से मिलने वाली आपूर्ति भी कई कारणों से बंद हो गई। जिससे ब्रिटेन के रँगरेज परेशान हो गए तथा नील के लिए अन्य स्रोत की तलाश शुरु की।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न—

(1) नील उत्पादन के लिए जलवायु कैसा होना चाहिए ?

(क) शीतोष्ण (ख) उष्णकटिबंधीय (ग) समाशीतोष्ण (घ) इनमें से कोई नहीं

(2) यूरोपीय देशों में कपड़े को रंगने के लिए नील के जगह पर किस चीज का प्रयोग किया जाता था ?

(क) नील (ख) नीले रंग (ग) रंग (घ) वोड

(3) कपड़े को रंगने के लिए यूरोपीय लोग किस चीज का प्रयोग करते थे ?

(क) नील (ख) वोड (ग) रंग (घ) (क) और (ख) दोनों

(4) भारतीय मिल से कैसे कपड़े तैयार होते थे ?

(क) फीकी (ख) तेज चमक (ग) केवल सफेद (घ) केवल काले

(5) यूरोपीय व्यापारियों ने नील के आयात पर प्रतिबंध लगाने की मांग अपनी सरकार से क्यों की थी ?

(क) क्योंकि भारतीय नील महंगा था।

(ख) नील से कपड़े खराब हो जाते थे।

(ग) नील के बजाय वोड से कपड़े ज्यादा चमकते थे।

(घ) नील का उत्पादन यूरोप में होने लगा था।

उत्तर—(1) (ख), (2) (घ), (3) (घ), (4) (ख), 5. (क)।

भारतीय में ब्रिटेन की बढ़ती दिलचस्पी—

यूरोप में बढ़ती मांग को देखते हुए ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत में नील उत्पादन का रास्ता ढूँढ़ने लगी। 18वीं शताब्दी के आखिरी दशकों में बंगाल में नील की खेती तेजी से फैलने लगी थी। भारत में पैदा होने वाला नील दुनिया में छा गया थ। 1788 ई. में जहाँ ब्रिटेन द्वारा आयात किए गए नील में भारत का हिस्सा 30% था। वहीं, 1810 में भारतीय नील का हिस्सा 95% हो गया। नील के व्यापार में मुनाफे को देखते हुए कंपनी के अफसर और व्यावसायिक एजेंट पैसा लगाने लगे। बहुत सारे अफसरों ने नील के कारोबार पर ध्यान देने के लिए अपनी नौकरियों छोड़ दी। भारी

© JCERT not to be republished

मुनाफे को देखते हुए स्कॉटलैण्ड और इंग्लैण्ड के बहुत सारे लोग भारत आए और नील का बगान लगा दिए। नील के व्यवसाय के लिए कम्पनी तथा नए-नए बैंक ऋण भी देते थे।

नील की खेती के दो मुख्य तरीके थे। पहला निज खेती तथा दूसरा रैयती। निज बगान मालिक अपनी जमीन पर नील की खेती करवाते थे। नील की खेती केवल उपजाऊ जमीन पर ही की जा सकती थी। जिस कारण बगान मालिकों को छोटे-मोटे खेत ही मिल पा रहे थे। नील फैक्ट्री के ईद-गिर्द बगान मालिक बड़े भू-खण्ड को पट्टे पर लेने की कोशिश की जिससे किसानों के साथ उनकी टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई। बड़े बगानों के लिए हजारों मजदूर एवं बहुत सारे हल बैल की आवश्यकता थी। प्रति बीघा 2 हल बैल की आवश्यकता थी। हलों की खरीदारी और उसका रख-रखाव मुश्किल था। जिस समय धान बोया जाता था उसी समय नील की फसल में काम होता था। किसान हल बैल के साथ धान के फसल में व्यस्त रहते थे। नील की खेती करवाने में बगान मालिकों को काफी मुश्किलें आ रही थीं।

रैयती व्यवस्था के तहत रैयतों को बगान मालिक से अनुबंध करना पड़ता था। अनुबंध के बाद बगान मालिक रैयतों को कम ब्याज पर कर्ज मुहैया करवाते थे। किसानों को कुल भूमि का 25% भूमि पर नील की खेती करनी पड़ती थी। बगान मालिक चाहते थे कि किसान अपनी सबसे अच्छी जमीन पर नील उत्पादन करें, किसान ऐसा करना नहीं चाहते थे, क्योंकि नील के पौधों की जड़ें गहरी होने के कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति को खत्म कर देते थे। नील की कटाई के बाद उस जमीन पर धान का उत्पादन कम होता था।

© JCERT not to be republished

> बीघा—जमीन का एक माप। ब्रिटिश शासन से पहले बीघे का आकार अलग-अलग होता था। बंगाल में अंग्रेजों ने इसका क्षेत्रफल करीब एक तिहाई एकड़ तय कर दिया था।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(i) भारत में नील की खेती .... में होती थी।

(ii) 1810 ई. में ब्रिटेन द्वारा आयात की जाने वाली नील में भारतीय नील का हिस्सा .... था।

(iii) नील की खेती .... प्रकार से होती थी।

(iv) नील की खेती के रैयती व्यवस्था में किसानों को अपनी कुल जमीन के .... भाग पर नील की खेती करना पड़ता था।

(v) नील के पौधे की गहरी जड़ें खेत के .... को कम कर देता था।

उत्तर—(i) उपजाऊ जमीन, (ii) 95%, (iii) दो, (iv) 25%, (v) उर्वरा शक्ति।

नील विद्रोह (1859-60)—

नील विद्रोह किसानों द्वारा किया गया एक आंदोलन था जो बंगाल के किसानों द्वारा सन् 1859 में किया गया था। किन्तु इस विद्रोह की जड़े आधी शताब्दी पुरानी थी। इस विद्रोह के आरम्भ में नदिया जिले के गोविन्दपुर गाँव के किसानों ने 1859 के फरवरी–मार्च में नील का एक बीज भी बोने से मना कर दिया। सैकड़ों रैयतों ने बगान मालिकों को लगान चुकाने से इनकार कर दिया। नील की फैक्ट्रियों को निशाना बनाया गया। बगान मालिकों के यहाँ काम करने वालों का सामाजिक बहिष्कार किया गया। यह आंदोलन पूरी तरह अहिंसक था तथा इसमें भारत के हिन्दू तथा मुसलमानों ने बराबर हिस्सा लिया। सन् 1860 तक नील की खेती एकदम ठप्प पड़ गई। विद्रोह के फैलाव में बुद्धिजीवियों ने भी अपनी भूमिका निभाई। उन्होंने रैयतों की दुर्दशा और बगान मालिकों के अत्याचार पर प्रकाश डाला। सरकार द्वारा 1860 में इसके लिए एक आयोग का गठन किया गया। सीटोन कार की अध्यक्षता वाली इस चार सदस्यीय आयोग को नील उत्पादन कार्य के जाँच का जिम्मा सौंपा। इस आयोग ने बगान मालिकों को दोषी पाया। आयोग ने कहा की नील की खेती रैयतों के लिए फायदे का सौदा नहीं है। आयोग ने रैयतों से कहा कि वे मौजूदा अनुबंधों को पूरा करें व आगे से चाहें तो वे नील की खेती बन्द कर सकते हैं।

इस बगावत ने बंगाल के बगानों में नील उत्पादन पूरी तरह धाराशाही हो गया। इसके बाद बगान मालिक बिहार पर ध्यान देने लगे। जब महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से लौटे तो बिहार के एक किसान ने उन्हें चम्पारण आकर नील किसानों की दुर्दशा देखने का न्योता दिया। 1917 में महात्मा गाँधी का यह दौरा नील बगान मालिकों के खिलाफ चंपारण आंदोलन की शुरूआत थी।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न—

(1) नील विद्रोह का शुरूआत कब की गई ?

(क) 1859 (ख) 1857 (ग) 1860 (घ) 1861

(2) नील आंदोलन बंगाल के किस जिले से प्रारम्भ की गई ?

(क) नदिया (ख) चौबीस परगना (ग) हाबड़ा (घ) कलकत्ता

(3) नील उत्पादन के जाँच के लिए गठित आयोग की अध्यक्ष कौन थे ?

(क) हैमिल्टन (ख) मैकाले (ग) सीटोन कार (घ) इनमें से कोई नहीं

(4) नील आयोग ने नील उत्पादन व्यवस्था पर किसके पक्ष में रिपोर्ट सौंपी ?

(क) बगान मालिक (ख) किसानों (ग) अंग्रेजों (घ) इनमें से कोई नहीं

(5) बिहार में नील किसानों के दुर्दशा के लिए भारत के किस नेता ने आंदोलन किया।

(क) राजेन्द्र प्रसाद (ख) सुभाष चन्द्र बोस (ग) महात्मा गाँधी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(1) क, (2) क, (3) ग, (4) (ख), (5) ग।

(भीख माँग लूँगा परन्तु ''नील नहीं उगाऊगाँ चाँदपुर, थाना हरदी के एक नील काश्तकार हाजी मुल्ला से मंगलवार जून, 1860 को नील आयोग के सदस्यों ने बात की। हाजली मुल्ला ने कुछ सवालों के जवाब इस तरह दिए—

डब्ल्यू एस. सीटन कार, नील आयोग के

अध्यक्ष—क्या अब तुम नील की खेती के लिए तैयार हो? अगर नहीं, तो किस तरह को शर्तों पर खेती करना चहोगे?

हाजी मुल्ला—मैं नील उगाने को तैयार नहीं हूँ। मुझे नहीं पता कि कोई भी नई शर्तें मुझे संतुष्ट कर सकती हैं।

श्री सीटोन—क्या तुम! रूपये प्रति बंडल की कीमत पर भी खेती नहीं करना चाहते ।

हाजी मुल्ला—नहीं, मैं नहीं करूँगा।

नील उगाने के बजाय मैं भीख माँग लूँगा पर नील नहीं उगाऊँगा।

© JCERT not to be republished

नील का उत्पादन कैसे होता था ?

नील गाँव आमतौर पर बगान मालिकों के फैक्ट्रियों के आस-पास ही होता था। कटाई के बाद नील के पौधे को कारखाने स्थित हौद (वैटस) में पहुँचा दिया जाता था। रैग बनाने के लिए 3 से 4 कुंड़ों की जरूरत पड़ती थी। प्रत्येक हौद का अलग-अलग काम था। पहले हौदे में नील की पत्तियों को तोड़कर गर्म पानी में कई घण्टों तक डुबोया जाता था। इस हौद को किण्वन या स्टीयर कुंड कहा जाता था। जब पौधे किण्वित हो जाते थे तो हौद में बुलबुले उठने लगते थे। अब सड़ी हुई पत्तियों को निकालकर द्रव्य को दूसरे हौद में छान दिया जाता था। दूसरा हौद पहले हौद के ठीक नीचे होता था। दूसरे हौद (बीटर वाट) में लगातार इस घोल को हिलाया जाता था। जब यह द्रव्य हरा के बाद नीला हो जाता था। तो हौद में चूने का पानी डाला जाता था। जिससे नील की पपड़ियाँ नीचे जम जाती थी। नीचे जमी नील की गाद-नील की लुगदी को तीसरे कुंड (निथारन कुंड) में डाल दिया जाता था। यहाँ इसे निचोड़कर बिक्री के लिए सुखा दिया जाता था।

(नील उत्पादन हेतु किण्वन हौद)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(i) कटाई के बाद नील के पौधे को कारखाने स्थित .... में पहुँचा दिया जाता था।

(ii) नील उत्पादन के लिए बने पहले हौद में नील के पत्तियों को .... किया जाता था।

(iii) दूसरा हौद जिसे .... भी कहते थे।

(iv) दूसरे हौद में घोल को हिलाने के बाद नीला होने से पहले घोल कर रंग होता था।

(v) नील को .... हौद से सुखाकर बिक्री के लिए तैयार किया जाता था।

उत्तर—(I) रौद, (II) किण्वित, (III) बीटर वाट, (IV) हरा, (V) तीसरा हौद।

स्मरणीय तथ्य

- 12 अगस्त 1765 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल की दीवानी प्राप्त हुई।
- 1770 ई. में बंगाल में पड़े अकाल से वहाँ एक तिहाई जनसंख्या समाप्त हो गई।
- 1793 ई. में बंगाल में लार्ड कार्नवालिस द्वारा स्थायी बंदोबस्त लागू की गई।
- होल्ट मैकेजी नामक अंग्रेज ने बंगाल में 1822 ई. में राजस्व वसूलने के लिए महालवाड़ी व्यवस्था को जन्म दिया।
- मद्रास के गवर्नर थॉमस मुनरो ने मद्रास प्रेसीडेंसी में 1820 ई. में रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की।
- भारत नील उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
- अंग्रेजों ने यूरोपीय कपड़ा व्यवसाय के लिए भारतीय नील का आयात बड़े पैमाने पर करते थे।
- यूरोप में नील के जगह पर बोड का इस्तेमाल कपड़ा रंगने के लिए किया जाता था।
- नील की खेती भारतीय किसानों के लिए नुकसानदायक था।
- नील की खेती निज खेती एवं रैयती खेती दो प्रकार से की जाती थी।
- नील विद्रोह बागान मालिकों के खिलाफ बंगाल के किसानों ने 1859 ई. में की।
- खेती नहीं करने को लेकर बगावत कर दिया जिसे नील विद्रोह के नाम से जाना जाता है।
- डब्ल्यू एस. सीटोन कार की अध्यक्षता वाली आयोग के रिपोर्ट के बाद बंगाल में नील की खेती पूर्णतः धराशायी हो गया।
- 1917 ई. में बिहार में किसानों द्वारा नील उत्पादन नहीं करने का लेकर महात्मा गाँधी द्वारा आंदोलन चलाया गया, जिसे चम्पारण आंदोलन के नाम से जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास प्रश्न

(I) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(क) यूरोप में बोड उत्पादकों को .... से अपनी आमदनी में गिरावट का खतरा दिखाई देता था।

(ख) 18वीं सदी के आखिर में ब्रिटेन में नील की माँग .... के कारण बढ़ने लगी।

(ग) .... की खोज से नील की अन्तर्राष्ट्रीय माँग पर बुरा असर पड़ा।

(घ) .... की दीवानी ने अंग्रेजों के लिए भारत में औपनिवेशिक जमीन तैयार की।

(ड.) चम्पारण आंदोलन .... के खिलाफ था।

(च) भारत के .... में चाय का उत्पादन वृहत पैमाने पर होता है।

उत्तर—(क) भारतीय नील, (ख) औद्योगीकरण, (ग) कृत्रिम रंग, (घ) बंगाल, (ड.) नील के बगान मालिक, (च) असम।

(II) मिलान करें—

I.	महाल	(क)	कारखाना में नील उत्पादन
II.	निज	(ख)	ग्राम समूह
III.	रैयती	(ग)	रैयतों की जमीन पर खेती
IV.	रैयत	(घ)	बगान मालिकों की जमीन पर खेती
V.	हौद	(ड.)	किसान

उत्तर—I. (ख), II. (घ), III. (ग), IV. (ड.), V. (क)

(III) लघुउत्तरीय प्रश्न—

(1) स्थायी बंदोबस्त के मुख्य पहलुओं का वर्णन करें।

(2) रैयतवाड़ी व्यवस्था कहाँ और किसके द्वारा लागू की गई ?

(3) महालवाड़ी व्यवस्था स्थायी बंदोबस्त के मुकाबले कैसे अलग थी ?

(4) यूरोपीय बाजारों में भारतीय नील की माँग क्यों थी ?

(5) रैयत नील की खेती से क्यों कतरा रहे थे ?

(6) किन परिस्थितियों में बंगाल में नील का उत्पादन धराशाही हो गया ?

(7) नील को कारखाने में तैयार करने के दौरान प्रथम हौद के कार्य पर प्रकाश डालें ?

© JCERT not to be republished

(IV) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

(1) अंग्रेजों ने कृषि में सुधार की आवश्यकता क्यों महसूस की ?

(2) किसान किन कारणों से नील विद्रोह के लिए बाध्य हुए ?

(3) नील आयोग ने अपनी रिपोर्ट में क्या कहा ?

(V) आइए करके देखें—

(1) ब्रिटिश काल में भारतीय किसानों द्वारा उपजाए जाने वाला व्यावसायिक फसलों की जानकारी प्राप्त कीजिए और इससे अधिक प्रभावित क्षेत्रों को भारत के मानचित्र पर अंकित कीजिए।

(2) चंपारण आंदोलन और उसमें महात्मा गाँधी की भूमिका के बारे में और जानकारी इकट्ठा करें।

© JCERT not to be republished